दूर शिक्षा निदेशालय

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

एम. ए. हिन्दी पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम कोड : एम ए एच डी – 010

द्वितीय वर्ष – चतुर्थ सेमेस्टर

सत्रीय कार्य एवं परियोजना कार्य निर्देश-पुस्तिका

क्रमांक	सत्रीय कार्य / परियोजना कार्य कोड	कहाँ प्रेषित करें	सम्बन्धित अध्ययन केन्द्र के पते पर सत्रीय कार्य / परियोजना कार्य पहुँचने की निर्धारित अन्तिम दिनांक
01.	एम ए एच डी – 19	सम्बन्धित अध्ययन केन्द्र के पते पर	31.03.2019
02.	एम ए एच डी – 20		
03.	एम ए एच डी – 21		
04.	एम ए एच डी – 22		
05.	एम ए एच डी – 23		
06.	एम ए एच डी – 24		

- अध्ययन केन्द्र पर पंजीकृत विद्यार्थी अपने-अपने सत्रीय कार्य / परियोजना कार्य अध्ययन केन्द्र पर ही जमा कराएँ। ऐसे विद्यार्थियों के सत्रीय कार्य / परियोजना कार्य का मूल्यांकन सम्बन्धित अध्ययन केन्द्र पर ही किया जाएगा।

दूर शिक्षा निदेशालय
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
गांधी हिल्स, पोस्ट : हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र – 442 001
फोन / फैक्स नं. : 07152-247146 वेबसाइट : http://hindivishwa.org/distance/

पुरन्दरदास
पाठ्यक्रम संयोजक

दिनांक : 14.11.2018

दूर शिक्षा निदेशालय
एम. ए. हिन्दी पाठ्यक्रम द्वितीय वर्ष – चतुर्थ सेमेस्टर

सत्रीय कार्य एवं परियोजना कार्य
दिशा-निर्देश

एम. ए. हिन्दी पाठ्यक्रम के द्वितीय वर्ष – चतुर्थ सेमेस्टर की 06 पाठ्यचर्याओं में से विद्यार्थी को प्रथम 04 अनिवार्य पाठ्यचर्याओं तथा पंचम (वैकल्पिक) पाठ्यचर्या (परियोजना कार्य) हेतु निर्धारित 02 विकल्पों में से किसी 01 पाठ्यचर्या (परियोजना कार्य) का चयन करना है। विद्यार्थी को प्रथम 04 अनिवार्य पाठ्यचर्याओं में प्रत्येक में 01–01 अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य तथा पंचम वैकल्पिक पाठ्यचर्या के अन्तर्गत निर्धारित परियोजना कार्य : रचनाकार का विशेष अध्ययन (MAHD – 23) अथवा हिन्दी की संस्कृति का विशेष अध्ययन (MAHD – 24) में से किसी 01 विकल्प का चयन कर उससे सम्बन्धित 01 परियोजना कार्य सम्पूर्ण कर जमा कराना अनिवार्य है। इस प्रकार विद्यार्थी को द्वितीय वर्ष के चतुर्थ सेमेस्टर में कुल 04 सत्रीय कार्य तथा 01 परियोजना कार्य सम्पन्न कर जमा कराने हैं।

प्रत्येक सत्रीय कार्य में विद्यार्थी को कुल 03 प्रश्नों के विश्लेषणात्मक उत्तर लिखने हैं। प्रत्येक प्रश्न के अधिकतम अंक 10 हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 1000 शब्दों में लिखना है।

पंचम पाठ्यचर्या (परियोजना कार्य) के लिए निदेशालय की वेबसाइट पर प्रदर्शित परियोजना कार्य निर्देश-पुस्तिकाओं का अवलोकन करें। परियोजना कार्य निर्देश-पुस्तिकाओं के अवलोकनार्थ निम्नलिखित URL का उपयोग किया जा सकता है –

http://www.mgahv.in/Pdf/Dist/gen/MAHD-23%20rachnakaar_ka%20vishesh_aadhyayan.pdf
http://www.mgahv.in/Pdf/Dist/gen/MAHD-24%20hindi_kee_sanshkriti_ka_vishesh_aadhyayan.pdf

पूर्ण किये गए सत्रीय कार्यों तथा परियोजना कार्य को मूल्यांकन हेतु निर्धारित अन्तिम दिनांक से पूर्व सम्बन्धित अध्ययन केन्द्र पर जमा कराएँ तथा प्रस्तुत सत्रीय कार्यों तथा परियोजना कार्य की एक-एक छायाप्रति अपने पास अनिवार्यतः सुरक्षित रखें।

*****

सत्रीय कार्य का उद्देश्य :-

सत्रीय कार्य का उद्देश्य विश्वविद्यालय द्वारा विद्यार्थी को उपलब्ध करायी गई पाठ्य-सामग्री को विद्यार्थी की हस्तलिपि में पुनः प्राप्त करना नहीं है अपितु विद्यार्थी की अध्ययन-प्रवृत्ति में निरन्तरता बनाए रखने के साथ ही उसके द्वारा अब तक किए गए अध्ययन का मूल्यांकन करना है। विद्यार्थी ने पाठ्यक्रम हेतु निर्धारित पाठ्य-पुस्तकों तथा सम्बन्धित पाठ्य-सामग्री को कितना पढ़ा-समझा है, उसका विवेचन-विश्लेषण करने की कितनी क्षमता अर्जित की है तथा सम्बन्धित पाठ्य के विषय में उसका अपना दृष्टिकोण कितना विकसित हुआ है ! आदि उद्देश्यों को दृष्टि में रखने के साथ-साथ विद्यार्थी की लेखन-क्षमता का मूल्यांकन करना भी सत्रीय कार्य का लक्ष्य है । विद्यार्थियों को सत्रीय कार्यों में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखते समय उपर्युक्त उद्देश्यों को स्मरण रखना चाहिए तथा प्राप्त पाठ्य-सामग्री का पुनर्प्रस्तुतीकरण न करते हुए अध्ययन उपरान्त अपनी विकसित विचार-क्षमता के आधार पर ही उत्तर लिखने का प्रयास करना चाहिए । पूछे गए प्रश्न के उत्तर में विद्यार्थी का अध्ययन, उसकी आलोचनात्मक दृष्टि, पाठ्य के विषय में उसकी अपनी समझ आदि के साथ ही भाषा एवं वर्तनी सम्बन्धी ज्ञान की अपेक्षा की जाती है । उपर्युक्त अपेक्षाओं को दृष्टि में रखकर ही विद्यार्थी द्वारा प्रेषित सत्रीय कार्यों का मूल्यांकन किया जाएगा ।

सत्रीय कार्य लेखन :-

विद्यार्थी सत्रीय कार्य लिखने से पूर्व कृपया निम्नलिखित निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें :-

01. योजना :- प्रथमतः सत्रीय कार्य के सभी प्रश्नों को पढ़कर उनका आशय समझ लीजिए । तदनन्तर सम्बन्धित पाठ्य-सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़िए । पूछे गए प्रश्नों से सम्बन्धित इकाइयों को मनोयोग से पढ़िए । निर्धारित पाठ्य-पुस्तकों का गहन अध्ययन कीजिए । साथ ही, सुझायी गई सहायक पुस्तकों को भी रुचिपूर्वक पढ़िए। पढ़ते समय प्रत्येक उत्तर से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण तथ्य चिह्नित कर लीजिए और अन्तिम प्रति तैयार करने से पूर्व उन्हें तार्किक क्रम में व्यवस्थित कर लीजिए।
02. संगठन कौशल :- अपने उत्तर को अन्तिम रूप देने से पूर्व एक कच्ची रूपरेखा बना लीजिए, श्रेष्ठतम तथ्य संकलित करने का प्रयास कीजिए और उसके समुचित विवेचन-विश्लेषण हेतु चिन्तन कीजिए। उत्तर लिखते समय प्रस्तावना और समाहार पर विशेष ध्यान दीजिए । कृपया ध्यान रखिए कि पूछे गए प्रश्नों के उत्तर तर्कसंगत हों, वाक्य-विन्यास और वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियाँ न हों, अनुच्छेदों में परस्पर तारतम्यता हो तथा भाव, शैली और प्रस्तुति का पर्याप्त संयोजन किया गया हो ।
03. सत्रीय कार्य लेखन :- सत्रीय कार्य विद्यार्थी द्वारा स्वयं की हस्तलिपि में सम्पन्न किया जाना है । पूछे गए प्रश्नों की अन्तिम प्रति स्वच्छ, स्पष्ट, पठनीय अक्षरों में लिखित, वर्तनी सम्बन्धी दोषों से रहित, प्रारूपबद्ध और बिना काट-छाँट किए तथा भली प्रकार नत्थी/स्पाइरल बाइंडिंग की गई हो । आवश्यकता प्रतीत होने पर मुख्य बिन्दुओं को रेखांकित किया जा सकता है । उत्तर-पुस्तिका में केवल नीले अथवा काले रंग की स्याही वाले पेन अथवा बॉलपेन का ही प्रयोग कीजिए । उत्तर-

पुस्तिका में प्रश्नों के उत्तर पूछे गए प्रश्नों के क्रमानुसार ही लिखिए। किसी भी प्रश्न का उत्तर लिखना प्रारम्भ करने से पूर्व सम्बन्धित प्रश्न क्रमांक अवश्य लिखिए। प्रत्येक नए उत्तर का प्रारम्भ नए पृष्ठ से कीजिए। उत्तर-पुस्तिका हेतु A–4 साइज़ के कागज़ों का प्रयोग करें। कार्य सम्पन्नोपरान्त सभी कागज़ों को भली प्रकार नत्थी कर लीजिए। विद्यार्थियों को सलाह दी जाती है कि अपनी उत्तर-पुस्तिका की सुरक्षित प्रस्तुति हेतु वे समस्त कागज़ों को स्पाइरल बाइंडिंग करा लें। विद्यार्थी अपनी सुविधानुसार गुणवत्तापूर्ण कागज़ के बड़े आकार के जिल्दबंद रजिस्टर में भी सत्रीय कार्य प्रस्तुत कर सकते हैं। सत्रीय कार्य के अन्तिम पृष्ठ पर कुल पृष्ठ संख्या लिखकर अपने हस्ताक्षर कीजिए। सत्रीय कार्य की विद्यार्थी द्वारा स्वयं की हस्तलिपि में लिखित प्रति ही स्वीकार की जाएगी। आवश्यकता प्रतीत होने पर विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत सत्रीय कार्य में लिखित हस्तलिपि (हेंड राइटिंग) तथा सत्रांत परीक्षा में विद्यार्थी द्वारा उत्तर-पुस्तिका में लिखित हस्तलिपि (हेंड राइटिंग) का मिलान करवाया जाएगा। दोनों की हस्तलिपि (हेंड राइटिंग) में भिन्नता पाए जाने पर ऐसे सत्रीय कार्यों का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा। सत्रीय कार्य की कंप्यूटर टंकित प्रति अस्वीकार्य है। कंप्यूटर टंकित सत्रीय कार्यों का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।

सत्रीय कार्य प्रस्तुतीकरण :

सत्रीय कार्य प्रस्तुतीकरण से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़िए :--

01. सत्रीय कार्य उत्तर-पुस्तिका के मुख पृष्ठ के प्रारूप हेतु परिशिष्ट क्रमांक- 01 देखिए।
02. उत्तर-पुस्तिका के मुखपृष्ठ के शीर्षभाग पर सर्वोपरि दूर शिक्षा निदेशालय, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा का नाम एवं पूर्ण पता लिखिए।
03. उत्तर-पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर विश्वविद्यालय के नाम और पते के नीचे पाठ्यक्रम का नाम : एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम, द्वितीय वर्ष – चतुर्थ सेमेस्टर, पाठ्यक्रम कोड : एम ए एच डी – 010, सत्रीय कार्य प्रश्नपत्र क्रमांक, सत्रीय कार्य कोड, पाठ्यचर्या क्रमांक तथा पाठ्यचर्या का शीर्षक लिखिए।
04. उत्तर-पुस्तिका के मुखपृष्ठ के मध्यभाग में अपना पूरा नाम (कृपया नाम के पहले श्रीमती/कुमारी/सुश्री/श्री/डॉ॰ न लिखें), अनुक्रमांक, नामांकन संख्या, पत्राचार पता (पिन कोड सहित) तथा मोबाइल नं. लिखिए।
05. उत्तर-पुस्तिका के मुखपृष्ठ के निम्नभाग में सम्बन्धित अध्ययन केन्द्र का नाम एवं पता लिखिए तथा स्थान एवं दिनांक अंकित करते हुए अपने हस्ताक्षर अवश्य कीजिए। अहस्ताक्षरित प्रति अस्वीकार्य है।
06. सत्रीय कार्य उत्तरपुस्तिका को परियोजना कार्य की रिपोर्ट के साथ जाँच हेतु सम्बन्धित अध्ययन केन्द्र के पते पर जमा करा दीजिये। लिफ़ाफ़े के शीर्ष पर **सत्रीय कार्य एवं परियोजना कार्य, एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम, द्वितीय वर्ष – चतुर्थ सेमेस्टर, पाठ्यक्रम कोड : एम ए एच डी – 010** अवश्य लिखिए।

एम. ए. हिन्दी पाठ्यक्रम द्वितीय वर्ष – चतुर्थ सेमेस्टर

सत्रीय कार्य प्रश्नपत्र क्रमांक – I

सत्रीय कार्य कोड : एम ए एच डी – 19 **अधिकतम अंक : 30%**

चतुर्थ सेमेस्टर

प्रथम पाठ्यचर्या (अनिवार्य)

पाठ्यचर्या कोड : MAHD – 19

पाठ्यचर्या का शीर्षक : हिन्दी नीतिकाव्य और मूल्य चेतना

- **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं 03 प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 1000 शब्दों में लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रश्न के अधिकतम अंक 10 हैं।**

1. महाभारत के दो बड़े प्रसंग 'श्रीमद्भगवद्गीता' एवं 'विदुरनीति' नीतिकाव्य के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हैं। 'भगवद्गीता' में जीवन की असारता, आत्मा की अमरता, निष्काम कर्मवाद आदि की शिक्षा मिलती है जबकि विदुर नीति में कुलधर्म, सर्वधर्म, राजधर्म, विश्वधर्म व आत्मधर्म के विविध स्वरूपों को देखा जा सकता है। 'भगवद्गीता' और विदुरनीति' में उल्लिखित नीति-उपदेश तथा परवर्ती हिन्दी नीतिकाव्य में उल्लिखित नीति-वचनों की अभिन्नता रेखांकित कीजिए।
2. 'चाणक्य नीति' में व्यवहार सम्बन्धी पद्यों के साथ राजनीति सम्बन्धी श्लोकों का सद्भाव भी प्राप्त होता है। इसमें राजनीति के विस्तृत उपदेशों के साथ ही साथ लोकनीति की भी सुन्दर शिक्षा दी गई है। क्या 'चाणक्य नीति' के उपदेशों का प्रभाव परवर्ती हिन्दी नीतिकाव्य पर भी विद्यमान है ? पड़ताल कीजिए और तुलनात्मक सूची बनाइए।
3. भर्तृहरि विरचित 'नीतिशतक' और 'वैराग्यशतक' उत्कृष्ट शैली में लिखे गए नीतिकाव्य हैं। कथ्य की समता के आधार पर भर्तृहरि के नीति-वचनों और परवर्ती हिन्दी नीतिकाव्य का तुलनात्मक संकलन तैयार कीजिए।
4. नैतिकता, जीवन-मूल्य, आदर्श, कर्त्तव्य आदि से आप क्या समझते हैं ? क्या नीतिकवियों द्वारा विरचित काव्य मनुष्य को जीवनोपयोगी संस्कार और नैतिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान करने में सहायक है ? अपने जीवन में इनकी तलाश कीजिए और उन संस्मरणों का उल्लेख कीजिए जब आपकी स्मृति में प्रसुप्तावस्था में अवस्थित नीतिवाक्यों ने किंकर्त्तव्यविमूढ़ स्थितियों में आपका मार्गदर्शन किया हो।
5. स्वयं को विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थी का अभिभावक मानते हुए विद्यालय के प्रधानाचार्य को एक पत्र लिखिए जिसमें विद्यालय स्तर पर नैतिक शिक्षा को अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाये जाने का आग्रह किया गया हो। अपने पत्र में पाठ्यक्रम में समाविष्ट करने योग्य अपेक्षित उपविषयों की एक सूची भी प्रस्तुत कीजिए और उनकी उपादेयता एवं आवश्यकता प्रतिपादित कीजिए।

एम. ए. हिन्दी पाठ्यक्रम द्वितीय वर्ष – चतुर्थ सेमेस्टर

सत्रीय कार्य प्रश्नपत्र क्रमांक – II

सत्रीय कार्य कोड : एम ए एच डी – 20 **अधिकतम अंक : 30%**

चतुर्थ सेमेस्टर

द्वितीय पाठ्यचर्या (अनिवार्य)

पाठ्यचर्या कोड : MAHD – 20

पाठ्यचर्या का शीर्षक : हिन्दी के विविध गद्य-रूप

- **निम्नलिखित प्रश्नों में से <u>किन्हीं 03 प्रश्नों के उत्तर लिखिए</u> ।**
- **प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 1000 शब्दों में लिखिए ।**
- **प्रत्येक प्रश्न के अधिकतम अंक 10 हैं ।**

1. "निबन्ध गद्य की कसौटी है । निबन्ध-रचना में शैली का महत्त्वपूर्ण स्थान है । निबन्ध की सर्वोत्तम अवस्था वही है जिसमें भाव और भाषा का सामञ्जस्य हो अर्थात् कल्पना, विचार और मनोभावों का यथायोग्य स्थान हो और उनके प्रतिपादन करने का ढंग भी उत्तम हो । रचना-चमत्कार की यह प्रणाली शैली कहलाती है ।" पाठ्यक्रम में निर्धारित निबन्धकारों विरचित निबन्धों के सन्दर्भ में उक्त कथन की युक्तियुक्त मीमांसा कीजिए
2. 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' के अतिरिक्त हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथा के शेष तीनों भागों का भी अध्ययन कीजिए और चारों अंश के उन एक-एक प्रमुख प्रसंगों की चर्चा कीजिए जिन्होंने आपको अत्यधिक प्रभावित किया हो ।
3. महादेवी वर्मा द्वारा रचित संस्मरणों का अध्ययन कीजिए और उनमें से किसी एक संस्मरण का पाठ्यक्रम में निर्धारित संस्मरण के साथ तुलनात्मक विश्लेषण कीजिए ।
4. योगेन्द्र को सम्बोधित एक विस्तृत पत्र लिखिए जिसमें इस बात का उल्लेख हो कि भदन्त आनन्द कौसल्यायन विरचित 'भिक्षु के पत्र' पढ़कर किन-किन विषयों के प्रति आपकी अवधारणा स्पष्ट हो गई है । पत्र में यह भी स्पष्ट कीजिए कि भगवान् बुद्ध की शिक्षाओं को समझने में ये पत्र किस तरह से अत्यन्त उपादेय सिद्ध होते हैं ?
5. अपने क्षेत्र के किसी एक प्रसिद्ध साहित्यकार के रचना-कर्म का अध्ययन कीजिए । उद्योगपूर्वक एक प्रश्नावली तैयार कीजिए और मिलने का समय लेकर उनसे भेंट कीजिए । प्रारम्भिक एक-दो परिच्छेद में साहित्यकार के व्यक्तित्व और कृतित्व का सामान्य परिचय देकर मुख्य रूप से उस भेंटवार्ता को प्रश्नोत्तर शैली में प्रस्तुत कीजिए ।

*****

एम. ए. हिन्दी पाठ्यक्रम द्वितीय वर्ष – चतुर्थ सेमेस्टर

सत्रीय कार्य प्रश्नपत्र क्रमांक – III

सत्रीय कार्य कोड : एम ए एच डी – 21 **अधिकतम अंक : 30%**

चतुर्थ सेमेस्टर

तृतीय पाठ्यचर्या (अनिवार्य)

पाठ्यचर्या कोड : MAHD – 21

पाठ्यचर्या का शीर्षक : भाषाविज्ञान

- **निम्नलिखित प्रश्नों में से <u>किन्हीं 03 प्रश्नों के उत्तर लिखिए</u>।**
- **प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 1000 शब्दों में लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रश्न के अधिकतम अंक 10 हैं।**

1. भाषा के विविध रूपों का विवेचन कीजिए।
2. विभिन्न आधारों पर हिन्दी के स्वरों एवं व्यंजनों का वर्गीकरण कीजिए।
3. पद-निर्माण की पद्धति की सोदाहरण विवेचना कीजिए।
4. वाक्य-विश्लेषण-प्रक्रिया को विस्तारपूर्वक समझाइए।
5. अर्थ-बोध के साधक और बाधक तत्त्वों को सोदाहरण समझाइए।

*****

एम. ए. हिन्दी पाठ्यक्रम द्वितीय वर्ष – चतुर्थ सेमेस्टर

सत्रीय कार्य प्रश्नपत्र क्रमांक – IV

सत्रीय कार्य कोड : एम ए एच डी – 22 **अधिकतम अंक : 30%**

चतुर्थ सेमेस्टर

चतुर्थ पाठ्यचर्या (अनिवार्य)

पाठ्यचर्या कोड : MAHD – 22

पाठ्यचर्या का शीर्षक : नव सामाजिक विमर्श

- **निम्नलिखित प्रश्नों में से <u>किन्हीं 03 प्रश्नों के उत्तर लिखिए</u>।**
- **प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 1000 शब्दों में लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रश्न के अधिकतम अंक 10 हैं।**

1. "स्त्री-विमर्शमूलक साहित्य अपने मूल स्वर में पितृसत्तात्मक व्यवस्था का विरोध करता है ।" पाठ्यक्रम में निर्धारित कृतियों का अध्ययन कर उक्त कथन की पुष्टि कीजिए।
2. पाठ्यक्रम में निर्धारित दलित-विमर्शमूलक साहित्य में अभिव्यक्त दलित चेतना का आकलन कीजिए।
3. "सामूहिकता, समता, श्रम-आधारित जीवन और सहअस्तित्व का आदिवासी जीवन-मूल्यों में विशेष महत्त्व है ।" पाठ्यक्रम में निर्धारित आदिवासी-विमर्शमूलक साहित्य के आधार पर उक्त कथन की मीमांसा कीजिए।
4. 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' और 'मुर्दहिया' का तुलनात्मक अध्ययन कीजिए।
5. यह निःसंदिग्ध है कि स्वानुभूत पीड़ा का सम्प्रेषण अपेक्षाकृत अधिक तीव्रतर और न्यायपूर्ण होता है। किन्तु क्या विमर्शमूलक रचना की प्रभावोत्पादक प्रस्तुति के लिए रचनाकार का उसी वर्ग से सम्बन्धित होना अनिवार्य है ? क्या एक गैर-आदिवासी, गैर-दलित, पुरुष रचनाकार अपेक्षाकृत श्रेष्ठ क्रमशः आदिवासी-विमर्शमूलक, दलित-विमर्शमूलक, स्त्री-विमर्शमूलक साहित्य की रचना नहीं कर सकता ? क्या साहित्यकार के लिए परकाय-प्रवेश सम्भव नहीं है ? उक्त के सम्बन्ध में अपना तर्कपूर्ण मत प्रस्तुत कीजिए। अपने मत की पुष्टि के लिए उन गैर-आदिवासी, गैर-दलित, पुरुष रचनाकारों द्वारा विरचित क्रमशः आदिवासी-विमर्शमूलक, दलित-विमर्शमूलक, स्त्री-विमर्शमूलक कृतियों को सूचीबद्ध कीजिए जिनमें आपको लगता है कि परकाय प्रवेश करने और पर-पीड़ा को सम्पूर्णता में अभिव्यक्त करने में वे रचनाकार असफल रहे हैं अथवा उन गैर-आदिवासी, गैर-दलित, पुरुष रचनाकारों द्वारा विरचित क्रमशः आदिवासी-विमर्शमूलक, दलित-विमर्शमूलक, स्त्री-विमर्शमूलक कृतियों की सूची बनाइए जिनमें आपको लगता है कि उन्होंने पूरी ताक़त और शिद्दत से परकाय-प्रवेश करते हुए उस वर्ग से परे होने पर भी पर-पीड़ा को समग्रता में अभिव्यक्त किया है।

परिशिष्ट- 01

सत्रीय कार्य उत्तर-पुस्तिका के मुख पृष्ठ का प्रारूप

.....

›

दूर शिक्षा निदेशालय
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
गांधी हिल्स, पोस्ट : हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र – 442 001
फोन / फैक्स नं. : 07152-247146 वेबसाइट : http://hindivishwa.org/distance/

.....

एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम, द्वितीय वर्ष – चतुर्थ सेमेस्टर, पाठ्यक्रम कोड : एम ए एच डी – 010

सत्रीय कार्य प्रश्नपत्र क्रमांक :

सत्रीय कार्य कोड :

पाठ्यचर्या क्रमांक :

पाठ्यचर्या का शीर्षक :

.....

विद्यार्थी का नाम :

अनुक्रमांक :

नामांकन संख्या:

पत्राचार पता :

मोबाइल नं. :

ई-मेल :

.....

सम्बन्धित अध्ययन केन्द्र का नाम एवं पता :

दिनांक :

स्थान :

विद्यार्थी के हस्ताक्षर :

*****